में रखने से भी मना कर दिया गया।

मुख्यमत्रा न इसक लिए प्रधानमत्रा उपास्थत थ।

कुम्हारी के किसान ले रहे हैं दोहरी फसल

सन स्टार संवाददाता

हो रही है किसानों को भरपूर आमदनी

रायपुर। हरित क्रांति विस्तार योजना में चेकडेम बनने से किसानों को सीधा फायदा मिल रहा है। कुम्हारी गांव के किसान बताते हैं कि पहले यहां केवल एक फसल ली जाती थी लेकिन चेकडेम के निर्माण से गांव में दो फसल ली जा रही है। गांव में किसानों को भरपूर आमदनी हो रही है। कई किसानों की आमदनी दो गुनी भी हो गई है।

कुम्हारी गांव के किसान अंबिका और परशुराम सहित कई किसानों ने बताया कि गांव में पहले चैकडेम नहीं होने से वर्षा का पानी व्यर्थ बह जाता था। लेकिन वर्ष 2012-13 चैकडेम बनने के बाद उन्हें फसल की सिंचाई के लिए तरसना नहीं पड़ रहा है। किसानों ने बताया कि चैकडेम बनने से गांव के 15 किसान लाभान्वित हो रहे हैं। कुम्हारी गांव में चैकडेम से लाभान्वित हो रहे किसानों ने बताया कि पहले धान की फसल के लिए भी पानी की कमी पड़ जाती थी। लेकिन हरित क्रांति विस्तार योजना से बनाए गए चैक डेम से न केवल धान की फसल के लिए पानी मिल रहा है बल्कि रबी फसल के लिए भी पानी मिल रहा है।

चेकडेम बनने के पहले गांव में 11.944 हेक्टेयर में खेती होती थी चेकडेम बनने के बाद अब यह रकबा बढ़कर 18 .944 हेक्टेयर हो गया है। पहले सिफ धान की खेती होती थी लेकिन अब 4.500 हेक्टेयर में चना और 2.500 हेक्टेयर में चना की फसल लगायी जाती है। इसी प्रकार धान की उत्पादकता 28 हजार क्विंटल से बढकर 35 हजार क्विंटल होगयी है। गांव में 14 हजार क्विंटल गेहूं और 500 क्विंटल चना का भी उत्पादन हो रहा है।

प्रगति के पथ...

कृषक का विवरण

नाम	- भगवानी राम यादव/ थानूराम यादव
उम्र	- 45
ग्राम	- डोगरिया (कोड़िया)
वि.खं.	- धमधा
अनुभव	- 15वर्ष
रकबा	- 3.25 हे.
खेतीहर सं.	- 05
संपर्क नं.	- 9753281836
पहचान/पुरस्कार	- प्रगतिशील कृषक

सफलता का सारांश : उत्पादन और आय में वृद्धि.
सफलता का क्षेत्र : असिंचित क्षेत्र से सिंचित में बदलाव एवं फसल क्षेत्र में वृद्धि.
शासकीय सहायता : हरितक्रांति विस्तार योजनांतर्गत चेकडेम निर्माण बोडेगांव क्रामांक-3 के अंतर्गत.
प्रेरणा : कृषक प्रशिक्षण, भ्रमण, कृषि अधिकारियों व वैज्ञानिकों की प्रेरणा एवं मार्गदर्शन.
सफलता का विवरण : कृषकों के मांग पर ग्राम पंचायत द्वारा प्रस्ताव पारित कर कृषि विभाग से निर्माण कराये जाने की मांग की गई.

संरचना निर्माण के पूर्व

मौसम	फसल का क्षेत्र हे.	फसल का क्षेत्र	उत्पादकता	उत्पादन	कुल आय
खरीफ	धान	2.00	30.00	60.00	81000.00
	अरहर	1.00	3.00	3.00	9000.00
रबी	चना	0.80	10.00	8.00	18400.00
	गेहूं	0.60	18.00	10.80	16200.00

संरचना निर्माण के पश्चात

मौसम	फसल का क्षेत्र	फसल का क्षेत्र	उत्पादकता	उत्पादन	कुल आय
खरीफ	धान	3.20	38.00	121.60	164160.00
रबी	चना	1.60	13.00	20.80	52000.00
	गेहूं	0.80	22.00	17.60	31680.00

सफलता का असर : चेक डेम निर्माण के बाद नालों में जल भराव होने के कारण फसल क्षेत्र में वृद्धि एवं सिंचाई सुविधा मिलने से धान बुवाई छिड़काव पद्धति के स्थान पर रोपाई पद्धति, कतारबोनी का उपयोग एवं जल स्तर में वृद्धि तथा निस्तार के लिए पानी का उपयोग।
अपेक्षा : प्रत्येक नाले में चेकडेम का निर्माण किया जाने से जल संग्रहण एवं भूमिगत जल स्तर में वृद्धि होगी.

हस्ताक्षर

प्रगति के पथ...

कृषक का विवरण

नाम	- होरीलाल/जबलूराम साहू
उम्र	- 54
ग्राम	- गातापार
वि.खं.	- पाटन
अनुभव	- 20
रकबा	- 2.15 हे.
खेतीहर सं.	- 03
संपर्क नं.	- 9753078128
पहचान/पुरस्कार	- सरपंच, प्रगतिशील कृषक

सफलता का सारांश : उत्पादन और आय में वृद्धि.

सफलता का क्षेत्र : मृदा जल संरक्षण, सिंचाई क्षेत्र विस्तार एवं लाभकारी फसल.

शासकीय सहायता : हरित क्रांति योजनान्तर्गत चेकडेम निर्माण.

प्रेरणा : कृषक प्रशिक्षण, भ्रमण, कृषि अधिकारी व वैज्ञानिकों की प्रेरणा एवं मार्गदर्शन.

सफलता का विवरण : वर्षा आधारित फसल से 1 एकड़ में 15 क्वि. उत्पादन प्राप्त होता था व विक्रय मूल्य 18,800 रू. लागात व्यय 8000/- शुद्ध लाभ 10,800/- प्राप्त होता था, रबी फसल तिवड़ा 4.00 क्वि. उत्पादन प्राप्त होता था जिसका विक्रय 8750/- बाजार मूल्य प्राप्त होता था, लागत व्यय रू. 1000 व शुद्ध लाभ 7750/- प्राप्त करता था इस प्रकार 18650/- वार्षिक शुद्ध लाभ अर्जित करता था.

ग्रामीणों की विशेष मांग पर ग्राम पंचायत के द्वारा प्रस्तावित किये जाने के उपरान्त कृषि विभाग (भूमि संरक्षण) द्वारा चेकडेम निर्माण किया गया जिससे जलस्तर में वृद्धि के साथ रबी में सिंचाई के साधन होने पर चना, सब्जी की खेती करने से आय में वृद्धि हुई है जो इस प्रकार है:-

क्र	फसल का नाम	फसल का रकबा (हेक्ट.में)	कुल उत्पादन (क्वि. में)	कुल आय (राशि रू.में)	कुल लागत (राशि रू.में)	शुद्ध लाभ (राशि रू.में)
1.	धान	2.15	120.50	163880.00	70000.00	930880.00
2.	चना	1.15	15.00	46500.00	18000.00	28500.00
3.	सब्जी (टमाटर)	1.00	400.00	200000.00	80000.00	120000

सफलता का असर : चेकडेम निर्माण पश्चात् संरचना में जल भराव होने के फलस्वरूप फसल क्षेत्र, किस्मों के साथ भूमिगत जल स्तर में वृद्धि हुई जिसके फलस्वरुप आस-पास के नलकूपों में पानी का प्रवाह एक समान गति से वर्ष भर प्राप्त हो रहा है। साथ ही जल भराव के कारण ग्रामीण के साथ-साथ पशुधन हेतु निस्तार सुविधा प्राप्त हुई है.

अपेक्षा : ऐसी संरचनाओं का निर्माण ज्यादा संख्या में किया जाना चाहिये जिससे जल संग्रहण एवं जलभराव से भूमिगत जलस्तर में वृद्धि होगी।

हस्ताक्षर

प्रगति के पथ...

कृषक का विवरण

नाम	- श्रीमती मंगेश्वरी राजपूत
उम्र	- 35 वर्ष
ग्राम	- डुमरडीह
वि.खं.	- दुर्ग
अनुभव	- 10 वर्ष
रकबा	- 1.81 हे.
खेतीहर सं.	- 4
संपर्क नं.	- 8535279835
पहचान/पुरस्कार	- वि.खं. स्तरीय पुरस्कार व प्रगतिशील कृषक

सफलता का सारांश : कृषि यांत्रिकीकरण.

सफलता का क्षेत्र : श्रम समय व लागत में कमी.

शासकीय सहायता : हरित क्रांति योजनांतर्गत सीडड्रील व रा.खा.सु.मि. से रोटावेटर.

प्रेरणा : प्रशिक्षण, कृषि विभाग के क्षेत्रीय अधिकारियों से संपर्क एवं मार्गदर्शन.

सफलता का विवरण : प्रारंभ में पारंपरिक ढंग से धान की खेती करने से उत्पादन 16 क्विंटल प्रति एकड़ प्राप्त होता था, जिससे शुद्ध लाभ प्रति एकड़ 8000 रू. प्राप्त होता था किंतु विभाग से सीडड्रील प्राप्त करने के बाद कतार बोनी विधि से धान का उत्पादन करने लगी जिससे कम समय व कम मजदूर की सहायता से अधिक उत्पादन प्राप्त होने लगा। साथ ही मेरे द्वारा अन्य फसल भी लिया जा रहा है जिससे आय में वृद्धि निम्न प्रकार से हुई:-

क्र	फसल का नाम	फसल का रकबा (हेक्ट.में)	कुल उत्पादन (क्वि. में)	कुल आय (राशि रू.में)	कुल लागत (राशि रू.में)	शुद्ध लाभ (राशि रू.में)
1.	धान	1.20	60 .00	81600.00	34000.00	47600.00
2.	मक्का	2.00	80 .00	104800.00	40000.00	64800.00
3.	अरहर	0.80	10 .00	43500.00	18000.00	25500.00
4.	सब्जी	1.80	200 .00	90000.00	35000.00	55000.00

सफलता का असर : हमारे गांव में कृषि यंत्रों के उपयोग के प्रति लोगों का रूझान बढ़ रहा हैं व आस पास के गांव के लगभग 50-56 प्रतिशत कृषक रबी मौसम में भी खेती कर रहे हैं जिससे निश्चित रूप से आमदनी में वृद्धि हुई है.

अपेक्षा : कृषि की उन्नत तकनीक को अपनाने हेतु अधिक से अधिक महिलाओं को प्रशिक्षित कर प्रोत्साहित किया जाना चाहिए.

मंगेश्वरी

हस्ताक्षर